



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 26 अंक: 46 बुलेटिन अवधि: 17-21 जून, 2017 दिन: शुक्रवार दिनांक: 16 जून, 2017

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	17-06-2017	18-06-2017	19-06-2017	20-06-2017	21-06-2017
वर्षा (मिमी0)	15	15	15	40	45
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	33	33	33	32	32
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	23	22	22	22	21
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	पूर्णतः आच्छादन	पूर्णतः आच्छादन
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	95	95	95
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	55	55	60	60	60
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	16	10	10	08	08
वायु की दिशा	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व	पूर्व-दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व

आगामी 17 से 21 जून तक मध्यम से भारी वर्षा होने तथा आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (9 से 15 जून 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से घने बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 34.0 से 42.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 22.4 से 26.5 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 55 से 76 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 34 से 54 प्रतिशत एवं हवा 4.6 से 9.6 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम-उत्तर-पश्चिम व पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ बासमती तथा सुगंधित धान की किस्मों जैसे— टाइप-3, तरावड़ी बासमती, पूसा बासमती-1, पंत सुगंध धान-17, 21, पी0 आर0 एच0 10 आदि की पौध 15 जून से 30 जून तक अवश्य डालें।
- ❖ मुगफली की उन्नतशील प्रजातियों— टा0 64, चन्द्रा, कौशल, प्रकाश, अम्बर आदि की बुवाई जून के दूसरे पखवाड़े में करे। बीज दर 60-70 कि0 ग्रा0/है0 रखें तथा 30-45 सेमी0 की दूरी पर बने लाइनो में बुवाई करे। उर्वरको में नत्रजन 20 किग्रा0 P₂O₅ 40 किग्रा0 और 45 किग्रा0 पोटाश/है0 तथा 200 किग्रा0 जिप्सम तथा 4 किग्रा0 बोरेक्स का प्रयोग करे।
- ❖ उर्द एवं मूंग की फसलों को पकते ही काट लें। कटाई में विलम्ब न करें अन्यथा दाने फलियों के चटकने से जमीन पर गिरते हैं। उर्द एवं मूंग की 80 प्रतिशत फलियों के पकते ही, फलियों की तोड़ाई करके, हरे पौधों को खेत में ही हरी खाद के रूप में पलट दें।
- ❖ धान की नर्सरी डाले।
- ❖ गन्ना में काला बग का प्रकोप हो तो क्लारपाइरीफॉस 20 ई0 सी0 के 2.0 ली0 /है0 या फेन्थोएट 50 ई0 सी0 के 1.0 ली0/है0 या क्यूनसलफॉस 25 ई0 सी0 के 2.0 ली0 को 500 ली0 पानी में घोल कर छिड़काव करे।

उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ कद्दु वर्गीय फसलों में बेल सूखने की समस्या के नियंत्रण हेतु सूखे हुए बेल को काटकर नष्ट कर दें तथा जड़ों की कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत (1 ग्राम प्रति लीटर) की दर से घोल बनाकर सिंचाई करें।
- ❖ कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियों पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियों को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फँफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियंत्रण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च की फसल में ऊपर से उन्टल काले पड़कर सूखने की समस्या की निदान हेतु संक्रमित शाखाओं को तोड़कर हटा दें एवं कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियों पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्त्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्त्रानिलिप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोकजाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्विटन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।

पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ पशुओं को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- ❖ नाइट्रेट विषाक्तता होने पर पशु की श्वसन एवं नाड़ी दर बढ़ जाती है एवं सांस लेने में कठिनाई, मॉसपेशियों में ऐंठन व कमजोरी आ जाती है। इससे बचाव हेतु मेथिलीन ब्लू के 1 प्रतिशत विलयन की 50-100 मि0ली0 मात्रा सीधे ही नस में देना चाहिए।

- ❖ सायनाइड ग्रस्त चारा खाए हुए पशु को पानी नहीं पिलाना चाहिए तथा चारागाहों में चराने ले गये पशुओं को कम बढ़ी हुई ज्वार, बाजरा, चरी की फसल न खाने दे।
- ❖ छोटे मुझाये हुए पीले व सुखकर ऐंठे हुए पौधों को चारे के रूप में उपयोग नहीं करें।
- ❖ गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियों में मेलाथियोन अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
- ❖ विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायों का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियों से बचाव हेतु गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतु शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करें।
- ❖ अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार करायें।
- ❖ पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।
- ❖ गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, दें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।

डा० आर० के० सिंह

प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,

गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर